

---

Nityanandasvamivirachitam Ruchira Stotram

——  
नित्यानन्दस्वामिविरचितं रुचिरस्तोत्रम्

——  
Document Information



---

Text title : Nityanandasvamivirachitam Ruchira Stotram

File name : nityAnandasvAmivirachitaMruchirastotram.itx

Category : vishhnu, svAminArAyaNa, krishna

Location : doc\_vishhnu

Author : nityAnandasvAmi

Acknowledge-Permission: Swaminarayan Sampradaya

Latest update : August 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 9, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



नित्यानन्दस्वामिविरचितं रुचिरस्तोत्रम्



(तोटकवृत्तम्)

परमाद्भुत-दिव्यवपू रुचिरं  
रुचिरेद्धितलेङ्गुलयो रुचिराः ।  
नखमण्डलमिन्दुनिभं रुचिरं  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ १ ॥

प्रपदे रुचिरे प्रसृते रुचिरे  
मृदु जानुयुगं रुचिरं रुचिरम् ।  
करिहस्त-निभोरुयुगं रुचिरं  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ २ ॥

कटिपुष्ट-नितम्बयुगं रुचिरं  
नतनाभिकजं जठरं रुचिरम् ।  
मृदुलौ स्तननीलमणी रुचिरौ  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ ३ ॥

हृदयं रुचिरं पृथुतुङ्गमुरः-  
स्थलमंसयुगं रुचिरं रुचिरौ ।  
करभौ करकञ्जतले रुचिरे  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ ४ ॥

भुजदण्ड-युगं रुचिरं चिबुकं  
विधुमोदकरं वदनं रुचिरम् ।  
रसना रुचिरा दशना रुचिरा  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ ५ ॥

जलजोपम-कण्ठशिरो रुचिरं  
तिलपुष्प-निभा सुनसा रुचिरा ।  
अधरौ रुचिरावलिकं रुचिरं

रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ ६ ॥

अरुणे चपले नयने रुचिरे  
स्मरचापनिभे मुनि-शान्तिकरे ।  
भ्रुकुटी रुचिरे श्रवणौ रुचिरौ  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ ७ ॥

हरिचन्दन-चर्चित-मङ्गमलं  
तिलकं रुचिरं कुसुमाभरणम् ।  
बहुशस्तिलका रुचिराश्चिकुरा  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ ८ ॥

सितसूक्ष्म-घनं वसनं रुचिरं  
मुनिरञ्जनकं वचनं रुचिरम् ।  
अवलोकन-माभरणं रुचिरं  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ ९ ॥

स्नपनं रुचिरं तरणं रुचिरं  
भरणं रुचिरं शरणं रुचिरम् ।  
रमणं रुचिरं श्रवणं रुचिरं  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ १० ॥

कथनं रुचिरं स्मरणं रुचिरं  
मननं रुचिरं स्तवनं रुचिरम् ।  
विनयो रुचिरो घटनं रुचिरं  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ ११ ॥

अशनं रुचिरं मुखवास इहा-  
चमनं रुचिरं नमनं रुचिरम् ।  
जलपानमहो रुचिरं शयनं  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ १२ ॥

गमनं रुचिरं दमनं रुचिरं  
शमनं रुचिरं जपनं रुचिरम् ।  
तपनं रुचिरं यजनं रुचिरं  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ १३ ॥

हवनं रुचिरं यमनं रुचिरं  
भजनं रुचिरं त्यजनं रुचिरम् ।  
भवनं रुचिरं सदनं रुचिरं  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ १४ ॥

जननी रुचिरा जनको रुचिरः  
स्वजना रुचिरा मुनयो रुचिराः ।  
बटवो रुचिराः पदगा रुचिरा  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ १५ ॥

अवनं रुचिरं रुचिरं रचनं  
हरणं रुचिरं रुचिरं करणम् ।  
पठनं रुचिरं रुचिरं रटनं  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ १६ ॥


वयुनं रुचिरं द्रढभक्तिविरा-  
गसदाचरणं रुचिरं रुचिराः ।  
परिषन् निजभक्तजना रुचिरा  
रुचिराधिपते रखिलं रुचिरम् ॥ १७ ॥

हरिकृष्ण मुदार-मनन्तमजं  
प्रणतार्तिहरं जलदाभतनुम् ।  
करुणार्द्रद्रशं वृषभक्तिसुतं  
नमनं विदधे सुचिरं रुचिरम् ॥ १८ ॥

इदमर्थभृतं मुनि-नित्यकृतं  
रुचिरं स्तवनं जनता-पवनम् ।  
श्रुतमात्र-मनोमल-नाशकरं  
जन-तापहरं भवतीष्टकरम् ॥ १९ ॥

इति श्रीनित्यानन्दस्वामिविरचितं रुचिरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

pdf was typeset on August 9, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

